“स्वयं निर्विघ्न रह सर्व को निर्विघ्न बनाना, जो विशेष कमजोरी हो वह समाप्त करके बाप की दिलपसन्द सभा में आना, दृढ़ संकल्प करो-कुछ भी हो जाए बदलना ही है ”

(होमवर्क 2012-13)

- बापदादा सभी बच्चों को देख खुश है, मुबारक भी देते हैं कि-अभी हर एक समझे कि *मैं इस बेहद के कार्य के लिए सिर्फ स्वयं के लिए नहीं, स्वयं के साथ सेवा के भी निमित्त हूँ।* अब ऐसी कमाल दिखाओ.. दुनिया में हलचल और हलचल को अचल बनाने वाले निमित्त आप हो। वह अपना कार्य नहीं छोड़ते तो आप भी अपने को निमित्त समझ... वह हलचल आप अचल.. दोनों साथ-साथ पार्ट बजाओ।
- सदा याद में रहना और एक दो को याद दिलाते रहना।
- बाप ने कहा बच्चों ने किया - ऐसे बच्चे सदा बाप के दिल में रहते हैं। (30-11-2012)
- बेफिक्र बादशाह की निशानी है - उनका मस्तक लाइट से चमकता है। और बेफिक्र बादशाह हो तो डबल ताजधारी हो। ***डबल ताजधारी ही बेफिक्र बादशाह है।*** तो आप सभी अपने को बेफिक्र और बादशाह अनुभव कर रहे हैं? अगर डबल ताज नहीं अर्थात् बेफिक्र नहीं तो माथे पर क्या आता है? ***किचड़े का टोकरा।*** तो क्या अच्छा लगता है?
- बेफिक्र बनने की विधि बहुत सहज है - मेरे को तेरे में बदल लो।
- दिन प्रतिदिन ***विश्व में भय तो बढ़ने वाला है*** लेकिन आप सभी बाप के बच्चे बेफिक्र बादशाह बन औरों को भी फिकर से दूर करेंगे। इसके लिए सहज साधन है - ***अमृतवेले से लेके रात तक-फॉलो ब्रह्मा बाप।*** क्योंकि ब्रह्मा बाप भी साकार तन में हर जिम्मेवारी होते बेफिक्र बादशाह रहा है। चाहे कईं बच्चों ने ब्रह्मा बाप को साकार में देखा नहीं लेकिन उनके चरित्र, उनकी प्रैक्टिकल लाइफ.. जैसे आप साकार में हो वैसे ही इतनी बड़ी जिम्मेवारी होते भी बेफिक्र बादशाह रहा है। अन्त तक भी उन्हों की सूरत में बेफिक्र के चिन्ह दिखाई दिये। अन्त दिन तक भी कोई आधार बिना लास्ट क्लास कराया है। ***ऐसे हेल्दी और फखुर में वेल्दी।*** तो आप सभी भी बेफिक्र बादशाह बने हो ना? चाहे शरीर का हिसाब-किताब है लेकिन स्थिति सदा बेफिक्र बादशाह। कैसा भी पेपर हो लेकिन ***पेपर और अनुभवी बनाके आगे बढ़ाने वाला है।*** डरना नहीं, कभी पेपर से डरना नहीं।
- नोट करना-सुबह को उठते ही चेक करो, *‘सबकॉन्सेस में भी कोई फिकर तो नहीं है?’* बीच-बीच में चेक करना। तो मेरे को तेरे में परिवर्तन कर देंगे! क्योंकि सारे कल्प में सिवाए आप बच्चों के डबल ताजधारी बेफिक्र बादशाह कोई नहीं बना है। आपके चित्रों में सदा डबल ताज है। तो यह टाइटल अपना अमृतवेले से लेके स्मृति में रखना - मैं कौन.. ***बेफिक्र बादशाह।***
- कोई भी समय आवे, कैसा भी समय आवे लेकिन ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी हर एक हर समय पर सदा खुश रहे। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी की खुशी गायब नहीं हो! हो सकता है? ***बेफिक्र भी बादशाह भी।*** छोटी बातें भी-बड़ी बातें भी आनी तो हैं लेकिन ब्रह्माकुमार और कुमारियों के लिए कोई बड़ी बात नहीं..कल्प-कल्प देखी हुई है। ***कल्प-कल्प पास किया है।*** ऐसे अनुभवी बन अब भी ऐसे पास हो जायेंगे जैसे खेल हो। ऐसी हिम्मत है ना! हिम्मत है? (15-12-2012)
- जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ कोई अप्राप्त शक्ति नहीं। सन्तुष्टता की शक्ति कैसा भी वायुमण्डल हो, कैसा भी सरकमस्टांश हो उनको सहज परिवर्तन कर सकती है। ***सन्तुष्टता माया और प्रकृति की हलचल को परिवर्तन कर देती है।*** तो हर एक अपने को देखे कि हम सन्तुष्टमणि बने हैं? ***कोई भी मनुष्यात्मा की परिस्थिति को परिवर्तन कर वायुमण्डल परिवर्तन कर***

सकते हैं? यह चेक करो - कि कोई भी साथियों में हलचल होती है उस समय यह शक्ति परिवर्तन करती है? उसकी रिजल्ट पहले अपने-अपने स्थानों को शक्तिशाली बनाने में सक्सेस (सफल) है?

- सबसे सहज साधन *सम्पूर्ण* बनने का जानते हो कौन सा है - *फॉलो फादर।* आदि से लेके अन्त तक ब्रह्मा बाप ने *सन्तुष्टता की शक्ति से हर परिस्थिति पर विजय प्राप्त की।*
- अब नया वर्ष आ रहा है इसमें हर एक को यह चेक करना है कि सन्तुष्टता की शक्ति से स्वयं भी सन्तुष्ट, साथी भी सन्तुष्ट रह, जो बापदादा चाहते हैं *वैसे ही सन्तुष्ट रहे?* कोई भी *समस्या सन्तुष्टता से समाप्त हुई?* क्योंकि दुनिया में दिन-प्रतिदिन असन्तुष्टता बढ़नी ही है; उसके लिए अपने को देखें कि मैं सारा दिन सन्तुष्टमणि रही या रहा? इसका सहज साधन है- *फॉलो ब्रह्मा फादर।* क्योंकि आजकल दुनिया में असन्तुष्टता बढ़नी ही है।
- विशेष सन्तुष्टता की शक्ति का वरदान चारों ओर के बच्चों को दे रहे हैं। *सन्तुष्ट रहना, सन्तुष्ट करना और सन्तुष्टता की शक्ति से विश्व में भी सन्तुष्टता का वायब्रेशन फैलाना।*
- बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष के लिए विशेष अमृतवेले सहज वरदान के रूप में वरदान देने का प्लैन बनाया है। सब पूछते हैं ना! नये वर्ष में क्या होगा? तो बापदादा का *विशेष दृढ़ संकल्प वालों को पुरुषार्थ में सहयोग प्राप्त होगा।* तो यह नये वर्ष की गिफ्ट सहज हो जायेगा। अमृतवेले का यह वरदान पसन्द है? पसन्द है! करते तो हो लेकिन *बापदादा की तरफ से विशेष* सहयोग, स्नेह, शक्ति प्राप्त होगी। ठीक है! ठीक है? क्योंकि बापदादा ने देखा सबको लगन अच्छी है। कुछ करना है, यह लगन अच्छी है लेकिन जो बीच में कोई न कोई सरकमस्टांश आते हैं उसके लिए *इस वर्ष में सन्तुष्टता की शक्ति विशेष कार्य में लगाना। चेक करना* तो आगे स्वत: ही बढ़ते जायेंगे।
- यह वर्ष चारों ओर *सन्तुष्टमणियों की लाइट कितनी चमक रही है, यह रिजल्ट देखेंगे।* इस वर्ष अपने में समस्या प्रूफ, समाधान स्वरूप की विशेष रिजल्ट देखनी है।
- *कुछ भी होवे* ना.. कोई भी ऐसी *प्रॉब्लम* छोटी-मोटी आवे ना! तो आप मधुबन में पहुंच जाना, मन से, तन से नहीं मन से। बापदादा बच्चों के मन में एकस्ट्रा *खुशी की खुराक* भर देंगे।
- अभी बापदादा हर एक के पुरुषार्थ में प्रोग्रेस यह चाहते हैं, उसके लिए बापदादा ने सुनाया कि हर ज़ोन अपने ज़ोन को निर्विघ्न बनावे। ऐसा प्लैन बनाओ जो हर ज़ोन में कोई भी पुरुषार्थ में कमजोर नहीं रह जाए। जैसे अभी साथी हो, वैसे पुरुषार्थ में भी *अच्छे ते अच्छे* साथी बनके चलें। क्योंकि *आप निर्विघ्न बनेंगे तो उसका वायुमण्डल विश्व में फैलेगा।* सारी विश्व परिवर्तन होनी है। आप लोग अगर *पुरुषार्थ में आगे जायेंगे तो उसका वायब्रेशन दुनिया के दु:खी लोगों तक पहुंचेगा।* इस वर्ष में पुरुषार्थ में चारों ओर सब तरफ नम्बरवन हो। *अभी एक दो के सहयोगी बन ऐसी रिजल्ट निकालो।* जो भी ज़ोन देखो नम्बरवन हो। यह हो सकता है?
- नये वर्ष 2013 के आगमन पर : इस नये वर्ष में कुछ न कुछ नवीनता अपने में लानी है। जो अभी तक परिवर्तन नहीं किया हो, मुश्किल लगता हो वह इस नये वर्ष में करके समाचार लिखना। अपने को निर्विघ्न बनाना और दूसरों को भी निर्विघ्न बनाने में सहयोगी बनना। *सब सन्तुष्टमणियां चमकती रहे-ऐसे बापदादा देखने चाहते हैं।* (31-12-2012)
- सारे कल्प में कोई भी आत्मा तीन तख्त के मालिक नहीं बन सकती लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें तीन तख्त के मालिक बन कितने रूहानी प्यार में, नशे में रहते हो! हर एक अपने से पूछे इतनी खुशी, इतना रूहानी नशा सदा स्मृति में रहता है? सदा शब्द सदा याद है? *बापदादा को कभी-कभी शब्द अच्छा नहीं लगता।*
- अब बापदादा यही चाहते हैं समय को तो सब जानते ही हो। समय कहाँ जा रहा है यह सब जानते हैं। तो समय को देखते.. *बापदादा की अचानक की बातें याद करो।* बापदादा की यही *दिल की आश है-एक भी बच्चा पीछे न हो, साथ*

रहे, साथ चले। साथ रहना स्थूल नहीं लेकिन दिल से *सदा* श्रीमत पर चलना - यही सदा साथ है। तो अभी समय प्रमाण जैसे प्यार होता है तो समझते हैं साथ रहें। साथ रहना स्थूल में तो हो नहीं सकता लेकिन जो बाप चाहता है, परिवार, साथी चाहते हैं उसमें ***समान और साथी बनके चलना यही साथ है।***

- बापदादा की शुभ आशा है -हर रोज़ ***अमृतवेले से लेके रात तक जो भी मन, वचन, कर्म में कार्य करते हो, उसमें चेक करो बाप का कहना और मेरा करना समान रहा?*** यह हो सकता है! इजी है? ***मुरली रोज़ की बाप का कहना है।*** तो हर एक चेक करे बाप का कहना मेरा करना.. एक रहा? यह मुश्किल तो नहीं क्योंकि हर एक रात को सोने के पहले अपने *रोज़ की रिजल्ट चेक तो करते ही होंगे।* बाप अभी चाहते हैं कि आप बच्चे स्वयं सम्पन्न बन समय को समीप लाओ। ब्रह्मा बाप भी आह्वान कर रहे हैं - आओ बच्चे साथ चलें अपने राज्य में। ***आत्माओं को भी मुक्ति का गेट खुलवाकर मुक्ति का पार्ट बजाने दो।*** किसको राज्य... किसको मुक्ति।
- अब जो बापदादा और आपकी भी चाहना यही है कि-सब ***सम्पन्न और सम्पूर्ण बन जायें..*** इस कदम को और तीव्र करो। आपको भी पसन्द है ना? दु:ख अशान्ति अपने भाई-बहनों की सुनते अच्छी नहीं लगती है ना? अब आपस में मिलके और बातों में समय न देके यह प्लैन बनाओ। चारों ओर सम्पन्न सम्पूर्ण बनने का उमंग-उत्साह हो। ब्रह्मा बाप यही चाहते हैं मेरा एक-एक बच्चा मेरे समान सम्पन्न बन जाये। यह ब्रह्मा बाप की आशा पूर्ण तो करेंगे ना? तो आज ब्रह्मा बाप चारों ओर के बच्चों पर स्नेह और शक्तियों की लहर वा शुभ संकल्प की लहर फैला रहे थे।
- चल रहे हैं नहीं ! नम्बर कौन सा? आ रहे हैं.. क्लास कर रहे हैं नहीं! हर दिन प्रोग्रेस क्या किया? मुरली सुनना, धारण करना, ***इसका प्रूफ है परिवर्तन करना।***
- सोचा और किया - इसको कहते हैं तीव्र पुरुषार्थी।
- कितनी भी बीमारी हो लेकिन बापदादा याद है तो बीमारी कम हो जाती है। ***जितनी कोशिश करके याद में रहते हैं तो बीमारी आधी हो जाती है।*** जैसे वह दवाई है तो पहली दवाई यह याद की है।
- बापदादा के निमित्त बने हुए जो भी बच्चे हैं। दादियां निमित्त बनी हैं तो उन्हों को भी बाबा विशेष दुआयें देते हैं। दुआओं से ही वह चलती हैं और चलाते हैं। विशेष दुआयें स्पेशल उन निमित्त बने हुओं को.. चाहे भाई हो-चाहे बहन हो लेकिन निमित्त बने हुए कोई भी कार्य के लिए है; उन्हों को ***स्पेशल*** दुआयें मिलती रहती हैं.. मिलती रहेंगी। (18-01-2013)
- बापदादा बच्चों को विशेष वरदान दे रहे हैं - *सदा बाप के स्नेह में समाते हुए मनजीत-जगतजीत बनना।* सदा मन का मालिक बन मनजीत बनो। कई समझते हैं मन के मालिक बनना यह मुश्किल है। लेकिन बापदादा कहते हैं मन को आप मेरा मन कहते हो ना! *जैसे और कर्मेन्द्रियां मेरी हैं तो वह कन्ट्रोल में हर कार्य करती हैं वैसे मनजीत-जगतजीत बनना मुश्किल नहीं है।* जैसे इन हाथ पांव को ऑर्डर में चलाते हो क्योंकि मेरा है, *ऐसे मन को भी शक्ति स्वरूप हो चला सकते हैं* लेकिन मालिक बन चलाना.. तो *मनजीत-जगतजीत बन जायेंगे।*
- सदा शक्ति स्वरूप आत्मा बन इन कर्मेन्द्रियों को चलाने वाले *मास्टर बन, मनजीत-जगतजीत बन, सदा खुश रहना और खुशी बांटना* क्योंकि आज विश्व की आत्मायें अपने-अपने कार्य करते हुए खुशी के बजाए अनेक सरकमस्टांश में अपने को मजबूर समझती हैं। *मजबूर को मजबूत करो, खुशी बांटो।* संसार की हालत तो देख ही रहे हैं लेकिन अपने को न्यारा और बाप का प्यारा बन उस प्यार में लवलीन रहो।

- सभी को यही लक्ष्य रखना है-कि स्वयं भी शक्तिशाली बन औरों को भी बापदादा का परिचय दे वारिस बनाने की सेवा करेंगे। अभी हर एक सेन्टर अपने आने वाले भाई-बहनों को *वारिस क्वालिटी बनाओ।* वारिस क्वालिटी अर्थात् जो *सदा* बाप के साथी बन खुद भी चले और अनेकों को भी बाप के साथी बनावे।
- प्रोग्राम तो सब करते हैं लेकिन हर प्रोग्राम से वारिस कितने बनाये, समीप कितने आये, *यह भी* रिजल्ट निकालो।
- हर एक को यह संकल्प हो कि हमें जो जानते नहीं हैं उनको परिचय दे; सन्देश तो दे दो, उल्हना नहीं देवें आपको। आपने तो हमें बताया नहीं। अपना उल्हना जरूर उतारो। *जो भी कनेक्शन में हैं* उन्हों को सन्देश देना आपका फर्ज है। *अड़ोसी-पड़ोसी, सम्पर्क वाले* यह उल्हना नहीं दें हमको तो इतना पता ही नहीं था।
- कुछ भी होना है अचानक होना है। *यह अचानक की बात सभी को ध्यान में रखनी है।* अपना भविष्य और औरों का भविष्य जितना बनाना चाहो अभी चांस है। बापदादा एक-एक बच्चे को मुबारक दे रहे हैं। आगे बढ़ भी रहे हो लेकिन *रफ्तार को और तेज करो।* चारों ओर के बच्चे बापदादा ने देखा कितनी याद में बैठते हैं और बापदादा भी *चक्र लगाके सभी बच्चों को प्यार भी देते हैं और प्यार के साथ-साथ मुबारक भी देते हैं।* चारों ओर उमंग अच्छा है। अब दु:ख से छुड़ाओ.. अब अपना राज्य आने दो। (02-02-2013)
- अभी बापदादा हर बच्चे को तीव्र पुरुषार्थी देखने चाहते हैं। *तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सब सबजेक्ट में अपने पुरुषार्थ से सन्तुष्ट हो।* और बापदादा भी हर बच्चे से यही चाहते हैं कि- *'अभी समय अनुसार हर बच्चे के चेहरे पर शक्तियां और खुशी नज़र आनी चाहिए।'* दिन-प्रतिदिन दुनिया में दु:ख तो बढ़ना ही है लेकिन ऐसे दु:ख के समय आपका खुशनुमा, दिव्यगुण वाला चेहरा देख उन्हों को थोड़े समय के लिए भी खुशी का अनुभव हो। हर एक बच्चे के चेहरे में वह ईश्वरीय स्नेह, ईश्वरीय प्यार, हिम्मत बढ़ाने का प्यार, खुश रहने का *अनुभव* हो। कई बच्चे कहते हैं वैसे तो हम खुश रहते हैं लेकिन कर्मयोगी जीवन में थोड़ा सा कर्म में फर्क पड़ जाता है। *कर्म में फर्क नहीं आना चाहिए।* कर्म करते भी सदा अटेन्शन रहे मैं कर्मयोगी आत्मा हूँ। शरीर को चलाने वाली, शरीर का भी *मालिक हूँ।* तो हर समय चाहे कर्म करो, चाहे नहीं करो लेकिन कर्म करने समय भी यह सोचो कि मैं कर्म कराने वाली आत्मा हूँ; और आत्मा..कौन सी आत्मा हूँ? बाप की लाडली बच्ची हूँ या बच्चा हूँ.. परमात्मा की प्यारी हूँ। तो मालिक होके इस शरीर को चलाने वाली..। सदा बाप की याद दिल में समाई हुई हो। तो हर एक चेक करो कर्मयोगी बनके कर्म कर रही हूँ? *कर्म योगी हूँ तो योग बाप से है।* तो बाप सदा फालो फादर कहते हैं.. बाप हमारे साथ है..।
- आज दुनिया में खुशी अभी कम होती जाती है और आपका चेहरा उनको खुशी का अनुभव कराये। आगे चलके दु:ख-अशान्ति तो बढ़नी ही है। समय नहीं मिलेगा इतना कोई को सुनने वा कोर्स करने का लेकिन आपका चेहरा उन्हों को खुशी का अनुभव कराये। हो सकता है ना! हो सकता है? अगर इतने एक-एक चेहरा, जगह-जगह से आया हुआ खुशी बांटने का लक्ष्य रखे.. सदा खुश.. कभी-कभी नहीं। ऐसी खुशी आपके पास है? तो सभी आत्माओं को अब खुशी बांटों। डबल फायदा है आपकी भी बढ़ेगी, उनकी भी बढ़ेगी।
- सभी क्या करेंगे अभी? पहले भी सुनाया, तीव्र पुरुषार्थी बनो, चल रहे हैं नहीं..उड़ रहे हैं और दूसरा बापदादा ने अटेन्शन खिंचवाया है - *कभी-कभी अक्षर खत्म करो।* खुशी है.. कहते हैं.. हैं.. लेकिन कभी-कभी खत्म हो जाती है। तो कभी-कभी शब्द सदा के लिए यहाँ छोड़के जाना, फिर कभी-कभी शब्द नहीं

कहना। सदा रहना। तो सभी खुश हैं ना! खुश हैं? सदा खुश रहेंगे? जो समझते हैं कि दुःख अशान्ति जो भी थोड़ी कभी-कभी आती है वह इस बारी हम यहाँ छोड़के ही रहेंगे (जायेंगे).. यह हिम्मत है? हिम्मते बच्चे मददे बाप तो है ही।

- हर एक विंग अभी तक जो मुख्य निमित्त बनाया है, अच्छे-अच्छे मददगार निकाले हैं, तो हर एक विंग पहले लिस्ट भेजे कि जब से विंग की स्थापना हुई, अब तक कितने और कौन-कौन निमित्त बने हैं। हर एक ने कितने रेग्युलर स्टूडेन्ट बनाये हैं, कितने सम्पर्क वाले बनाये हैं, कितने सहयोगी बनाये हैं, यह लिस्ट हर एक विंग की आनी चाहिए। चाहे सहयोगी भी बने हैं, सहयोगियों की भी लिस्ट आवे। तो ज़ोन की रिजल्ट का सबको पता पड़ जायेगा। अच्छी बात है ना! करेंगे? लिस्ट लिखना पड़ेगा। उसके बाद फिर प्रोग्राम आपको मिलेगा क्योंकि मेहनत तो करते हैं.. बापदादा खुश है। बहुत अच्छा है, अच्छा रहेगा और आपकी रिजल्ट को देख और भी आगे बढ़ेंगे।
- (बड़े प्रोग्राम के लिए प्रेरणा) जो भी आये वह कुछ लेके जाये। क्या लेके जावें? वायुमण्डल से शान्ति के वायब्रेशन, आगे बढ़ने के वायब्रेशन लेके जावें। सुनते तो हैं अच्छा तो लगता है लेकिन अच्छा बनने की *प्रेरणा* लेके जायें।
- सदा कोई भी कार्य करो तो कार्य करने के पहले बाप से स्पेशल कार्य की सफलता का वरदान लेके बापदादा के वरदानी बनके वह कार्य करो तो सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार हो जायेगी। कार्य करने के बाद नहीं करना, पहले वरदान लेके फिर कार्य करेंगे तो सफलता आपके साथ हो जायेगी।(20-02-2013)
- बापदादा सभी बच्चों से यही चाहते हैं कि - हर बच्चा अपने चेहरे से आत्माओं को लाइट बनाए इस जीवन में सदा खुश रहने का सन्देश दे, *हर एक आत्मा को सुख-शान्ति की अनुभूति हो,* हर एक बच्चा फरिश्ता बन विश्व में भी फरिश्तेपन का अनुभव करावे।
- *कुछ भी हो जाए मेरा बाबा.. मीठा बाबा.. प्यारा बाबा.. याद आया तो सब दुःख, सुख में बदल जायेंगे।*
- बापदादा आज आप सभी बच्चों से कौन सी सौगात लेने चाहते हैं? आज के दिन जो भी व्यर्थ संकल्प रहे हुए हो वह बाप को सौगात में दे दो। क्योंकि *व्यर्थ संकल्प बहुत टाइम वेस्ट करते हैं,* खुशी की अनुभूति करने नहीं देते। तो यह सौगात दे सकते हो! दे सकते हो?
- बाप यही चाहते हैं कि-सबके चेहरे *सदा* ऐसे खुशमिजाज हो जो कोई भी देखे.. आपका चेहरा उनको प्रेरणा दे कि हमें भी ऐसा बनना ही है। तो आज (शिवरात्रि) के दिन यह संकल्प करो कि *सदा हमारा चेहरा ऐसा फरिश्ते समान दिखाई देगा-जैसे ब्रह्मा बाप का चेहरा देखा।* कितनी भी जिम्मेवारी होते सदा चेहरा फरिश्ते रूप में ही देखा। बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा फरिश्ता रूप बनने के लिए-फॉलो ब्रह्मा बाप। कोई भी कर्म करो तो चेक करो ब्रह्मा बाप ने यह कर्म किया? तो आज विशेष ब्रह्मा बाप सभी को डायमण्ड गिफ्ट दे रहे हैं *"मेरा बाबा.. मीठा बाबा.. प्यारा बाबा।"* आज के दिन *सदा हर कदम-फॉलो ब्रह्मा बाप.. सदा चमकता हुआ चेहरा... ।* ब्रह्मा बाप जितनी जिम्मेवारी.. *जैसे ब्रह्मा बाप ने न्यारा और प्यारा होके करके दिखाया..* तो आज का दिन क्या इशारा देता है? *सदा न्यारा और सर्व का प्यारा।*
- बापदादा हर एक से गुडमार्निंग भी करते, गुडनाइट भी करते। सिर्फ बाहर से नहीं करते, दिल से करते हैं। कोई भी बच्चा ऐसा नहीं जिसका बाप से प्यार नहीं हो और बाप का भी हर एक बच्चे से प्यार है। चाहे थोड़ा ढीला भी हो जाते हैं लेकिन फिर भी *थोड़ा यहाँ-वहाँ होके ठीक हो जाते हैं।* प्यार अच्छा है। बापदादा देखते

हैं कि बापदादा से प्यार सबका बहुत दिल का है इसीलिए वह चला रहा है और चलाता रहेगा। *एक-एक को बापदादा याद करता..* ऐसे नहीं नाम नहीं लेता.. लेकिन एक-एक चाहे मधुबन में है, चाहे अपने-अपने ज़ोन में है, बाप को देरी थोड़ेही लगती है.. सबको प्यार करने में देर नहीं लगती। इसलिए सब अनुभव करना गुडनाइट सभी से बापदादा करते हैं; *आप करो नहीं करो* लेकिन *बापदादा जरूर करते हैं।* बाप का प्यार है ना! बापदादा कुछ भी हो जाए लेकिन रात को सभी बच्चों के तरफ चक्कर लगाता है। चक्कर लगाने में बापदादा को कितना टाइम लगता! बहुत जल्दी लगाता है। फरिश्ते रूप में है ना!

- रोज़ ऐसे बीच-बीच में 5 मिनट बिल्कुल अशरीरीपन का अनुभव करते चलो क्योंकि *समय आगे बहुत नाज़ुक आने वाला है।* ऐसे टाइम पर अगर अभ्यास नहीं होगा, कन्ट्रोलिंग पावर नहीं होगी तो सक्सेस नहीं हो सकेंगे। इसलिए बीच-बीच में दो मिनट, एक मिनट, 5 मिनट अशरीरी बनने का अभ्यास अपने दिनचर्या के प्रमाण अवश्य करते चलो.. कन्ट्रोलिंग पावर। *रोज़ अपनी प्रैक्टिस करते रहना।* ऐसा समय आयेगा जो यह प्रैक्टिस बहुत-बहुत आवश्यक लगेगी इसलिए अपने समय प्रमाण अशरीरी बनने का अभ्यास जरूर करो।

(09-03-2013)

- बाप हर बच्चे को चेक करते हैं - सदा भाग्य स्वरूप रहता है या कभी-कभी? भाग्यवान का चेहरा *सदा* खुशकिस्मत, खुशनुमा होगा। तो हर एक अपने को चेक करे कि *अमृतवेले से लेके रात तक खुशमिजाज और खुशकिस्मत रहा?* खुशी कभी कम भी नहीं होनी चाहिए। बापदादा ने देखा *कई बच्चे ऐसे खुशमिजाज रहते हैं जो उनका चेहरा देख दूसरा भी बदल जाता है (नाखुश से खुश हो जाता)।*
- बापदादा को कई बच्चे कहते हैं *शक्ति स्वरूप* या *खुशमिजाज* रहते तो हैं लेकिन कभी-कभी। यह कभी-कभी का शब्द बापदादा को पसन्द नहीं है क्योंकि हर बच्चे से बाप का अति प्यार है, तो *सदा* बाप समान दिखाई दे। ऐसे भी बच्चे हैं.. लेकिन बाप चाहते हैं हर बच्चा *सदा* खुशी में उड़ता रहे, सदा रूहानियत में मुस्कराता रहे, दूसरों को भी मुस्कराये।
- खुशी किसको भी दो, तो कम होगी या बढ़ेगी? तो ऐसी खुशी जो सदा बढ़ती रहती है उसको कभी नहीं छोड़ना। *आपका चेहरा कोई भी देखे-सदा खुशमिजाज।* बातें तो आती हैं.. कलियुग का अर्थ ही क्या है! कलियुग क्यों कहते हो! कलह-कलेष होगा तब तो कलियुग कहते हो ना? लेकिन हमें उसमें क्या करना है? परिवर्तन। *बातों में नहीं आना लेकिन बातों को परिवर्तन कर सेवा के लिए सदा एवररेडी रहना।*
- सदा अपना भाग्य याद रहता है ना? भगवान और भाग्य.. इससे *सदा* हर्षित चेहरा-जो हर्षित चेहरे को देख और भी हर्षित हो जाएं...। तो बापदादा सभी बच्चों को यही याद दिलाते हैं कि *सदा हर्षित रहो और हर्षित बनाओ।*
- हर एक को बाप से प्यार है; बाप का भी बच्चों से प्यार है तो बाप समझते हैं कि हर बच्चा कम से कम ब्रह्मा बाप समान त्याग, तपस्या और सेवा...यह मंजूर है। ब्रह्मा बाप को फॉलो करना है.. तैयार हैं?
- जो भी अपने-अपने स्थान से आये हैं उन एक-एक बच्चे को नाम लेके.. उनकी सूरत आगे लाके.. बापदादा वरदान दे रहे हैं - सदा कोई भी बात आवे ना..जो *कायदे प्रमाण होनी नहीं चाहिए* लेकिन.. आ जाए तो, जो ऐसी बात आये *उसको उस समय ही अपने दिल से निकाल बाप को दे दो।* बाप आपेही सम्भालेगा। देना तो आता है ना! लेना आता है-देना भी आता है?

- होली.. जो ऐसी बात होती है हो ली.. दिल में नहीं रखो। तो होली की सौगात यही है-जो व्यर्थ बात आवे.. होली करना। सदा होली करना और होली बनना। वह हिन्दी-वह इंगलिश..दो अक्षर हैं। होली करना और होली बनना। अपने दिल में वायदा करो कि *हम कभी भी खुशी नहीं गवाँयेंगे।*
- सभी सदा यह संकल्प करना कि- *मुझे ब्रह्मा बाप समान बनना ही है।* फॉलो ब्रह्मा बाबा। कोई भी कार्य ऐसा हो उसमें चेक करो ब्रह्मा बाप ने किया? आपकी वह 10 प्वाइंटस निकली हुई हैं, उस 10 प्वाइंट में देखना कि ब्रह्मा बाप ने क्या-क्या किया.. और फॉलो ब्रह्मा बाप करना।
- उमंग उत्साह से अभी वारिस निकालो।
- कराने वाला भले बाप है लेकिन निमित्त बनके करने वाले को भी बापदादा की यादप्यार मिलती है।
- हर ज़ोन को मिलके एक दो प्रोग्राम जरूर करने चाहिए। इससे क्या होता! एक दो में मिलने का भी चांस अच्छा बनता और एक दो को सहयोगी बनने का भी चांस हो जाता है। *बापदादा अभी यह चाहते हैं हर एक ज़ोन मिलकरके बड़ा प्रोग्राम करे।*
- टीचर्स को बापदादा अपना साथी कहते हैं। जैसे बाप वैसे टीचर्स भी बाप समान आगे से आगे बढ़ती चलें, बढ़ाती चलें।
- नयापन यह लाओ जो आने वाले हैं उन्हों को नजदीक लाओ, कम से कम स्टूडेन्ट तो बनें। कभी-कभी आने वाले सम्पर्क खुद बढ़ावें। *दिल होवे हम जायें - ऐसी रिजल्ट आने वालों की होनी चाहिए।* स्टूडेन्ट नहीं बनें लेकिन आने वाले मिलने वाले सुनने वाले तो बनें, कम से कम मुरली तो सुनें। (22-03-2013)
- बाप कहते हैं - हर एक बच्चे की सूरत में, मस्तक में *खजाने के मालिकपन की झलक* दिखाई देनी चाहिए।
- सदा चेक करो जैसे अभी आपके चेहरे चमक रहे हैं ऐसे सदा रहता है? जो कोई भी देखे चेहरा बताये; *मुख से बोलने की आवश्यकता नहीं.. चेहरा बोले।* ऐसे ही सदा खजाने से सम्पन्न.. चाहे कर्म करते, चाहे योग करते, चाहे बाप की याद में रहते.. ऐसे ही दिखाई दे। हर एक अपने चमकते हुए चेहरे समान रह सकते हैं ना? क्योंकि आजकल जैसे समय आगे बढ़ेगा वैसे हालतों के प्रमाण टेन्शन बढ़ेगा; तो *आपके चेहरे उन्हों को खुश करेंगे।* ऐसी सेवा करने के लिए हर एक बच्चे को तैयारी करनी है। खजाने कौन से हैं? जानते हो ना! विशेष खजाना है *ज्ञान, योग, धारणा* तो अपने में चेक करो।
- सबसे श्रेष्ठ खजाना आजकल का संगम का समय है, क्योंकि आजकल के समय में स्वयं बाप, बाप..गुरू के सम्बन्ध में आये हुए हैं। आज के समय में स्वयं बाप बच्चों को खजानों से सम्पन्न बना रहे हैं। तो बोलो समय से प्यार है ना? तो सभी चेक करो- *हमारे में सर्व खजाने जमा हैं, बाप समान सर्व खजाने बांट रहे हैं?*
- कोई भी बात आये लेकिन बातें हमारे खजानों की खुशी नहीं ले जायें। जैसे अभी खुशी का चेहरा है, स्नेह-प्रेम का चेहरा है.. ऐसे सदा रहे। बीती सो बीती.. अभी सदा रहेगा? तो कभी भी कोई भी बात आये ऐसे ही चेहरा रहेगा? तो सब देखेंगे.. *यह कौन आये हैं.. !* आपको देख करके आधे खुश तो वह भी हो जायेंगे।
- आज से सभी बच्चे-अपने दिल में प्रॉमिस करो *सदा* खुश रहेंगे और सभी को खुश करेंगे। क्योंकि खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। बापदादा ने अनेक बार खुशी की कमाल सुनाई है। तो बापदादा का स्लोगन है..यह याद रखो, यहाँ (मस्तक पर) लिख दो - खुश रहना है और खुश करना है। है पसन्द?
- अभी बापदादा यही चाहते हैं कि - आप एक-एक को कोई भी दूर से देखे तो खुद भी मुस्कराये, आपके खुशी की शक्ल देख करके खुद भी खुश हो जाये। यह सेवा करेंगे! करेंगे? बाप वाह बच्चे वाह! कह रहे

हैं। आज से सभी स्थानों में अचानक कोई भी आये; बापदादा भी भेजेंगे.. क्योंकि *बापदादा बच्चों का ऐसा-वैसा चेहरा देखने नहीं चाहते हैं।* तो बापदादा को खुश करना है ना! करेंगे? सभी दिल से हाँ जी कह रहे हैं। अभी हर एक सेन्टर अपने साथियों को चेक करना, कहना नहीं कुछ, क्यों..क्या..नहीं कहना, लेकिन अपनी शक्ल ऐसी प्यार की करना जो चुप हो जाए। ऐसी सेवा करेंगे ना! खुद रहना औरों को भी आप समान बनाना। कोई भी अचानक कभी भी किसी सेन्टर पर जाये तो ऐसे अनुभव करे कि- *हम खुशी के स्थान पर आये हैं।* जहाँ खुशी है वहाँ सब कुछ है। तो अभी बापदादा अचानक कोई को भेजेगा.. गुप्त; देखेंगे.. क्योंकि आप सभी बच्चे बड़े-बड़े बाप के बच्चे हो। बापदादा भी बच्चों को देख खुश हो रहे हैं और *दिल से बधाई दे रहे हैं - सदा खुश-आबाद रहो।*

- हिम्मत वाले के ऊपर एकस्ट्रा मदद का संकल्प बापदादा का साथ रहता है। तो आज जो भी आये हैं उन एक-एक को बापदादा विशेष हिम्मत दे रहे हैं, कभी घबराना नहीं। मेरा बाबा कहा.. बाबा हाज़िर हो जायेगा। सिर्फ दिल से कहना, ऐसे नहीं मेरा बाबा। बाबा का भी बच्चों से प्यार है.. हिम्मत आपकी मदद बाप की है ही।
- दूसरी सीज़न के लिए हर एक को दो कार्य करने हैं – एक तो अपने सेवास्थान को सदा शुभ भावना, शुभ कामना से सदा निर्विघ्न बनाना; स्वयं निर्विघ्न रहना, सर्व को निर्विघ्न बनाना। मंजूर है? बाप को सदा खुश रखना। सोचना नहीं, सोच देना नहीं। फिर भी बाप तो सदा खुश है और सदा ही हर बच्चे को दुआयें देते हैं - अमर भव! लेकिन दूसरी सीज़न के लिए विशेष क्या करेंगे? बापदादा का यही संकल्प है कि हर एक बच्चा अपनी कमजोरी को तो जानते ही हैं, जो विशेष कमजोरी हो - वह कमजोरी समाप्त करके आना...चाहे व्यर्थ संकल्प हो, चाहे क्रोध हो। छोटा-छोटा क्रोध भी स्वयं को और स्थान को तंग करता है। तो जो भी कमी हो उसको समाप्त करके आना। पसन्द है! पसन्द है? वाह भाई वाह! जैसे हाथ उठाने में एवररेडी हो गये ना, ऐसे ही त्याग करने में भी एवररेडी रहना।
- दूसरी सीज़न कौन सी सभा होगी? *निर्विघ्न, बाप के दिलपसन्द सभा होगी।* अभी देखेंगे.. सेन्टर वाले रोज़ रात्रि को यह याद दिलाना कि प्रॉमिस क्या किया है? *प्रॉमिस प्रमाण चल रहे हैं?* शुभ भावना से, टोकने के रूप से नहीं पूछना.. शुभ भावना से एक दो के सहयोगी बन एक दो को आगे बढ़ाने की *शुभ भावना से इशारा देना।*
- संकल्प को वहाँ जाते भी रोज़ स्मृति में लाना। रात्रि के समय जब सोने जाओ तो चेक करना - *जो संकल्प किया वह हो रहा है?* अगर नहीं हो रहा हो तो रात को सोने के पहले ही दूसरे दिन के लिए उमंग-उत्साह को इमर्ज करके फिर सोना.. और सुबह को उठकर देखना कि *किया हुआ संकल्प अभी भी इमर्ज है या थोड़ा भी मर्ज हो गया..*अगर मर्ज हो गया हो फिर उमंग में लाना।
- अभी करने में नम्बर लेना है। तो इस सीज़न में *जो संकल्प कर रहे हो वह संकल्प नहीं लेकिन करना ही है..*कुछ भी हो जाए बदलना ही है। यह दृढ़ संकल्प करो। *आखिर समय को समीप तो लाना है।* अपने राज्य में चलना है ना! चलना है? तो देखेंगे.. *चलने की तैयारी करनी ही है।*
- बाप को अपने दिल में बिठाया है? दिलाराम है ना! तो *दिल में बिठाओ..* जो भी कुछ होगा दिलाराम सहयोग देगा।
- साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ में राज्य करेंगे। अच्छा। **(5-4-2013)**